IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विद्यालयो ं मे ं शिक्षको ं की शिक्षण सक्षमता एवं प्रासगिक दक्षताओं का अध्ययन सार

SUNIL KUMAR TRIPATHI

Research Scholar, Dept. of Education,
Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences,
Sehore, Bhopal-Indore Road, Madhya Pradesh, India

DR. NEELAM KHARE

Research Guide, Dept. of Education,
Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore, Bhopal Indore Road, Madhya Pradesh, India

शिक्षा व्यक्ति, समाज एव ं राष्ट्र की प्रगति के साथ–साथ सभ्यता एव ं संस्कृति के विकास के लिए भी आवश्यक है। शिक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। यह सर्वमान्य है कि शिक्षा व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमताओं को विकसित कर परिस्थितियो ं के साथ समायोजन की शक्ति एव ं कौशल प्रदान करती है। आज का बालक कल का नागरिक एव ं प्रशासक है जिसके व्यक्तित्व, सामाजिक विश्वास, जीवन मूल्यो, आदर्शों एव ं आदतां ं की नीवं शिक्षा द्वारा ही रखी जाती है। इसीलिए शिक्षा को व्यक्ति समाज, राष्ट्र तथा विश्व के वर्तमान एव ं भविष्य के निर्माण तथा विश्व बन्धुत्व के विकास के अनुपम साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। वस्तुतः शिक्षा एक आरे संस्कृति और सभ्यता का सरं क्षण करती है, वहीं दूसरी आरे उनका संवर्धन तथा सम्प्रेषण करती है। परिचय

शिक्षा वह प्रकाश पुंज है जो संपूर्ण समाज को अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है। शिक्षा के बिना जीवन अंधकारमय होता है। किसी भी धर्म, सम्पद्र ाय, समाज तथा राष्ट्र की पहचान शिक्षा की प्रकृति एवं गुणवत्ता से होती है। सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियो ं के अनुसार शिक्षा, अंधविश्वास, कुरीतियो ं तथा पिछड़पे न को दूर कर स्वच्छ एव ं नियोजित समाज का निर्माण करती है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अपने आसपास की घटनाओ ं का सूक्ष्म अध्ययन कर उनका विश्लेषण उनमे ं निहित तर्क की खोज और अंततः किसी परिणाम का अनुमान लगाने की क्षमता का विकास करना हाते ा है। शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम है। यह मनुष्य को समाज व आसपास के पर्यावरण का ज्ञान, संस्कृति तथा विभिन्न परिस्थितियो ं में भूमिका का निवर्ह न रोजगार योग्य बनाने तथा उत्तरदायित्वो ं का पालन करने के लिये प्रेरित करती है। शिक्षा बालक को एक संस्कारवान एव ं चेतनशील प्राणी बनाती है यही बालक देश का भविष्य हाते ं हैं और शिक्षा किसी भी देश की बुनियाद होती है। अतः आवश्यक है कि बुनियाद मजबतू होनी चाहिये। सुदृढ़ शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्र को सुदृढ बनाया जा सकता है।

शिक्षा संस्कार देती है संस्कार से विचारों का परिष्कार हाते ा है। परिष्कृत विचारो ं की नीव पर आदर्श चरित्र का निर्माण हाते ा है। चरित्रवान व्यक्तियो ं से स्वस्थ समाज बनता है और स्वस्थ समाज ही किसी राष्ट्र के विकास की धुरी होती है। उससे राष्ट्र को एक पहचान मिलती है। शिक्षा का जीवन

में वही स्थान है जो फूल में उसकी सुगन्ध का होता है। शिक्षा समाज में चलने वाली वह सौद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियो ं का विकास उसके ज्ञान एवम् कौशल मे ं वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक को सभ्य सुसस्ं कृत एव ं योग्य नागरिक बनाया जा सकता है। इस तरह शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा वैयक्तिक सामाजिक एवम् राष्ट्रीय विकास का आधार है जिस राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था राष्ट्र की आवश्यकताओं, जन आका ंक्षाओ ं एवम् मनावे ैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है तथा जिसका क्रियान्वयन प्रभावी व कुशल प्रशासको ं एवम् शिक्षको ं क` हाथ में रहा है वह राष्ट्र उत्तरोत्तर बहुमुखी उन्नति करता रहा है।

शिक्षक अपनी भूमिका का प्रभावी निवर्ह न तब ही कर सकता है जबकि उसें इस प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। शिक्षक को व्यक्ति व समाज का निर्माता माना गया है। जिसके कन्धो ं पर देश के भाग्य निर्माण की जिम्मेदारी हाते ी है। केवल विद्यालय के कक्षा–कक्ष शिक्षण से कोई व्यक्ति अध्यापक नही बन सकता बल्कि कुछ अन्य दक्षताओ ं एक कौशलो ं का होना आवश्यक है यही कारण है कि समय पर
विभिन्न आयोगो ं ने नए शिक्षको ं को प्रशिक्षित करने को महत्वपूर्ण माना है।

शिक्षण–शिक्षक एवं छात्र के मध्य विचारो ं के आदान–प्रदान करने की प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक एक अनुभवी एवं ज्ञानवान होकर कम अनुभवी एवं अपरिपक्व व्यक्ति (छात्र) की सहायता करता है। इस सन्दर्भ में प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एडम्स (1968) के अनुसार ''शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है, इसकी एक धुरी शिक्षक है और दूसरी धुरी विद्यार्थी है। शिक्षक अपने व्यक्तित्व के पभ् ाव से विद्यार्थी के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन एवं सुधार करता है और विद्यार्थी उसका अनुगमन करते हुए प्रभावित हाते ा है। इस प्रक्रिया मे ं शिक्षक क` प्रयास को शिक्षण कहते हैं।''

शिक्षण की उपर्युक्त विवचे ना के आधार पर यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षण एक प्रक्रिया है तथा इस पर विभिन्न परिस्थितियो ं एव ं शिक्षक व्यवहार का प्रभाव पड़ता है। शिक्षण प्रक्रिया मे ं शिक्षक केन्द्रीय स्थान रखते हुए अपने व्यवहार क` मानवीय तत्वो ं द्वारा विद्यार्थियो ं पर प्रभाव डालता है। वह न केवल शब्दो ं द्वारा वरन् अपनी अभिरूचि द्वारा प्रभावशाली ढंग से विचारो ं का आदान प्रदान कर छात्रो ं के साथ अन्तःक्रिया
स्थापित करता है।

शिक्षको ं की पूर्ती हेतु करना है शिक्षकां` में इन सब गुणो, कौशलो ं एव ं क्षमताओं का विकास एक प्रक्रिया के माध्यम से किया जा सकता है। इस रूप में अध्यापक शिक्षा एक प्रक्रिया के रूप में कार्य करती है, इस सम्पू र्ा प्रक्रिया के परिणामस्वरूप उत्पाद के रूप में एक कुशल एव ं प्रभावी शिक्षक को तैयार करने का प्रयास किया जाता है जो समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। इस दृष्टि से यह माना जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा एवं शिक्षक एक सिक्क` के दो पहल ू है जिसमें अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को एक प्रक्रिया के रूप मे ं तथा शिक्षक को उसके उत्पाद के रूप मे ं देखा जा सकता है। प्रशिक्षित शिक्षको ं के निर्माण हेतु अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में अध्यापक को निम्न रूपो ं मे ं देखा जाता है। सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

मलिक, मोहम्मद अहसान, नवाब, समीना एवनं ईम, बषरत, दानिष, रिजवान कौसर (2010) ने पाकिस्तान के विष्वविद्यालय के षिक्षकों के संगठनात्मक प्रतिबद्धता एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया। अध्ययन में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। विष्वविद्यालय के षिक्षको ं को लिया गया। उपकरण के रूप मे ंसंगठनात्मक प्रतिबद्धता एव ंकार्य संतुष्टि से सम्बन्धित स्वनिर्मित प्रष्नावली न्यादर्ष

के रूप में 650 का प्रयोग किया गया। विष्वविद्यालय के षिक्षको ं के संगठनात्मक प्रतिबद्धता एवं कार्य संतुष्टि क` मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

चोपड़ा, अरूणा (2015) ने व्यावसायिक प्रतिबद्धता, कार्य संतुष्टि एवं षिक्षण प्रभाविता का अध्ययन किया। अध्ययन मे विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्ष के रूप में हरियाणा राज्य के 22 जिलो ं के बी0 एड0 कालेज के 252 षिक्षक प्रषिक्षको ं को लिया गया। उपकरण के रूप मे ं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के लिए विषाल सूद द्वारा बनाई गई स्कले का प्रयोग किया गया। षिक्षण प्रभाविता के लिए प्रमोद कुमार एवं डी0 एन0 मूथा द्वारा बनाई ईस्केल का प्रयोग किया गया। कार्य संतुष्टि के लिए अमरसिह एव ं टी0 आर0 शर्मा द्वारा बनाई गई स्कले का प्रयोग किया गया। सांख्यिकी विधियो ं में मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण, एनोवा, प्रोडक्टमोमेण्ट को रिलेषन का पय्र ोग किया गया। परिणामो ं से यह ज्ञात हुआ कि महिला एवं पुरूष षिक्षक प्रषिक्षको ं व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के विभिन्न आयामो ं के मध्य कोई भी अन्तर नहीं पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र के षिक्षक प्रषिक्षकों मे ं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का स्तर शहरी की तुलना में अधिक पाया गया।

भदौरिया (2013) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको ं एव ं शिक्षिकाओ ं की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया। शोध का उद्देश्य था, शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो ं में कार्यरत शिक्षक एव ं शिक्षिकाओं की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना। इसके लिये ग्वालियर शहर मे ं कार्यरत 100 शिक्षक एव ं शिक्षिकाओ ं का चयन किया गया। सांख्यिकीय गणना के लिये मध्यमान, मानक विचलन, सहसम्बन्ध एवं टी–परीक्षण का प्रयोग कर प्रदत्तो ं का विवेचन किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषणो परान्त पाया गया कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो ं में कार्यरत शिक्षको ं की शिक्षण प्रभावशीलता मे ं कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

अग्रवाल (2009) ने विभिन्न प्रबन्धतंत्रो ं द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो ं के संगठनात्मक वातावरण, शिक्षक व्यवहार, शिक्षक प्रभावशीलता, कृत्य सन्तोष तथा विद्यार्थियो ं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन पर एक शोध अध्ययन किया जिसका मुख्य उद्देश्य उत्तर पद्र `श माध्यमिक शिक्षा परिषद्, इलाहाबाद द्वारा संचालित सरकारी, अनुदानित एवं गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो ं के संगठनात्मक वातावरण, शिक्षक व्यवहार, शिक्षक प्रभावशीलता, कृत्य सन्तोष तथा विद्यार्थियो ं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु प्रदत्त के रूप में विभिन्न प्रबन्धतन्त्रो ं के 38 विद्यालयो ं के 436 शिक्षको ं द्वारा 3299 विद्यार्थियो ं का चयन किया गया। सांख्यिकीय प्रविधियो ं में मध्यमान, मानक विचलन, प्रसरण विश्लेषण व क्रान्तिक अनुपात का उपयोग किया गया। परिणामस्वरूप पाया गया कि सरकारी विद्यालयो ं का उक्त चरो ं के सन्दर्भ में स्तर अनुदानित एव ं गैर अनुदानित विद्यालयो ं की अपेक्षा उच्च हाते ा है। जबकि अनुदानित विद्यालयो ं का मध्यम तथा गैर अनुदानित विद्यालयो ं का अपेक्षाकृत निम्न स्तर होता है।

गदम (2011) ने निःशुल्क एव ं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम का अधिकार के प्रति, शिक्षक की जागरूकता का अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य के शिक्षक के कार्य अनुभव के प्रभाव का अध्ययन एव ं शैक्षिक योग्यता के प्रभाव का अध्ययन। न्यादर्श के रूप मे ं प्राथमिक शिक्षको ं का चयन किया गया। सांख्यिकीय रूप में मध्यमान, मानक विचलन एव ं टी–मान की गणना की गयी। अध्यनोपरान्त परिणामस्वरूप पाया गया कि अनुभवहीन शिक्षको ं की अपेक्षा अनुभवी शिक्षक अपनी जिम्मदे ारी के प्रति अधिक जागरूक पाये गये तथा शिक्षको ं मे ं शैक्षिक योग्यता का अन्तर पाया गया। सर्वेक्षण विधि :

सर्वेक्षण विधि वर्णनात्मक विधि का अंग है। जिन अनुसंधान कार्यों का उद्देश्य वर्तमान में विद्यमान तथ्यो ं का अध्ययन स्थिति वर्णन एव ं व्याख्या करना है; उसके लिए सर्वेक्षण विधि सर्वोपरि है। शैक्षणिक समस्याओ ं के अध्ययन मे ं सर्वेक्षण विधि को व्यापक रूप से प्रयुक्त किया गया है। सीमित समय साधनो ं की कमी के कारण किसी भी जनस ंख्या पर निश्चित समय में समस्या के शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का योगदान अवर्णनीय है, जैसा कि जॉन बेस्ट (1959) ने कहा है – ''आकड़ों का एकत्रीकरण सम्पू र्ा जनसखं या से सर्वेक्षण द्वारा होना चाहिए।'' शैक्षणिक सर्वेक्षणो ं में विद्यालय सर्वेक्षण का विशेष महत्व है। जिसके बारे में गुडवार एव ं स्कटे ्स (1941) ने ये विचार व्यक्त किये हैं – ''यह इसी प्रकार कहा जा सकता है कि कोई भी अन्य एकीकृत कार्य इतनी
पू र्ाता के साथ अनुस ंधान की आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का उसकी विविध अवस्थाओं में प्रतिनिधित्व नहीं ं कर सकता जितना की विद्यालय सर्वेक्षण करता है।'' जनसंख्या एवं न्यादर्श का चयन :

जनसखं या – शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध अध्ययन मे ं उन्नाव जनपद में संचालित परिषदीय प्राथमिक विद्यालय उनमे ं कार्यरत अध्यापक एव प्रधानाध्यापक को सम्पू र्ा जनसंख्या मे ं सम्मिलित किया है। इस अध्ययन मे ं उन्नाव जनपद के प्राथमिक विद्यालयो ं में अध्यापन कर रहे अध्यापको ं की शिक्षण सक्षमता को उनक ं लिगं , शैक्षिक योग्यता एव ं वातावरण, शैक्षिक अनुभव आदि का अध्ययन करना है।

न्यादर्श चयन : न्यादर्श के चुनाव की बहुत सारी विधियां ं मे ं ProbabilitySampling ज्यादा वैज्ञानिक है तथा इसके भी कई भाग हैं– Sample Random Sampling साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्श, स्तरित यादृच्छिक प्रतिदर्श व गुच्छ प्रतिदर्श ;Clustersampling), कोटा प्रतिदर्शन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन। आंकड़ो ं का सांख्यिकी विश्लेषण :

सर्वप्रथम प्राप्ताको ं का सारणीकरण किया जब सभी 250 अध्यापकों का सारणीकरण हा ं गया तब उस ं दक्षता के क्रम में निर्धारित किया उसके पश्चात् प्रत्येक दक्षता के हिसाब से उसके मध्यमान मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात प्राप्त किये गये। इसके लिए S.P.S.S. सांख्यिकी तकनीकी से आंकड़ों का विश्लेषण किया गया जिसमें विभिन्न वर्गों के सार्थकता का अन्तर को प्राप्त किया गया है। S.P.S.S. मे ं मुख्य रूप से निम्नलिखित को प्राप्त किया गया। मध्यमान, मानक त्रुटि, मानक विचलन, t परीक्षण, ANVOA, का उपयोग किया गया।

प्रदत्तो ं का विश्लेषण एवं विवचे न

इस शोध अध्ययन का पहला मुख्य उद्देश्य पुरुष एवं महिला शिक्षको ं की शिक्षण दक्षता के ग्यारह बिन्दुओ ं पर तुलना करना। शोधकर्त्ता ने उक्त उद्देश्य के निरीक्षण के लिए
एक शून्य परिकल्पना का निर्माण किया जो इस प्रकार है।

प्रासगिक दक्षता, धारणागत दक्षता, वस्त ुनिष्ठ दक्षता, निष्पादन दक्षता, शैक्षणिक गतिविधियां ं से सम्बन्धित दक्षता, मूल्यांकन दक्षता, प्रबन्धकीय दक्षता, अभिभावको ं के साथ करने सम्बन्धी दक्षता, समुदाय व एजेन्सियो ं के साथ काम करने सम्बन्धी दक्षता, अध्ययन–अध्यापन सामग्री विकसित करने सम्बन्धी दक्षता, स्कूल परिस्थितियो ं से सम्बन्धित दक्षता आदि।

सारिणी 4.1 प्राथमिक विद्यालयो ं में अध्ययनरत शिक्षक और शिक्षिकाओं के शिक्षण सक्षमता (भावनात्मक पक्ष) की तुलना

क्रम सं.	शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सम्भाव्यता	सार्थकता स्तर
प्रासंगिक दक्षता	पुरुष	97	4.48	.579	.069	1.222	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	महिला	153	4.57	.497				
धारणागत दक्षता	पुरुष	97	13.23	1.454	.185	2.943	< .05	सार्थक अन्तर
	महिला	153	13.77	1.379				
वस्तुनिष्ठ दक्षता	पुरुष	97	21.27	2.013	.261	.550	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	महिला	153	21.41	2.012				
शैक्षणिक गतिविधियों से सम्बन्धित दक्षता	पुरुष	97	3.88	1.013	.138	.382	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	महिला	153	3.82	1.142				
मूल्यांकन दक्षता	पुरुष	97	12.28	1.967	.251	.245	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	महिला	153	12.34	1.878				
प्रबन्धकीय दक्षता	पुरुष	97	17.06	1.946	.254	.348	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	महिला	153	17.15	1.976				
अभिभावकों के साथ काम करने सम्बन्धी दक्षता	पुरुष	97	8.46	1.500	.198	.297	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	महिला	153	8.41	1.562				
अध्ययन–अध्यापन सामग्री विकसित करने की दक्षता	पुरुष	97	13.63	1.285	.189	.889	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	महिला	153	13.80	1.699				

उपर्युक्त सारणी संख्या 4.1 का निरीक्षण करने पर भावनात्मक क्षेत्र की सभी दक्षताओ ं पर परीक्षण किया गया है। सारणी संख्या 4.1 का अवलोकन करने पर प्रासगिक दक्षता पर परु ष 77 शिक्षक और महिला शिक्षको ं के प्राप्ताकं ो ं के मध्यमान क्रमशः 4.48 और 4.57 पाये गये इनके मानक विचलन क्रमशः .579 और .497 पाये गये तथा मानक त्रुटि .069 एवं क्रान्तिक अनुपात 1.222 है। श्री .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। भावनात्मक क्षेत्र की प्रासगिक दक्षता पर पुरुष और महिला शिक्षको में महिला शिक्षको ं के मध्यमान अधिक पाया गया। परन्तु सांख्यिकीय गणना के द्वारा दाने ो ं वर्गों के मध्यमानो ं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। इस दक्षता पर पुरुष और महिला शिक्षको ं को समान स्तर पर पाया गया।

सारणी 4.2 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रो ं के परिष ग्रामीण एव ं शहरी क्षेत्रो ं के परिष शहरी क्षेत्रो ं के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयो ं में दीय प्राथमिक विद्यालयो ं में अध्यापनरत शिक्षको ं अध्यापनरत शिक्षको ं की शिक्षण सक्षमता (भावनात्मक पक्ष की शिक्षण सक्षमता
(भावनात्मक पक्ष की शिक्षण सक्षमता (भावनात्मक पक्ष) की तुलना

कम सं0	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सम्भाव्यता	सार्थकता स्तर
प्रासंगिक दक्षता	ग्रामीण	170	4.56	.532	.072	1.252	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	शहरी	80	4.48	.527				
धारणागत दक्षता	ग्रामीण	170	13.68	1.281	.213	1.710	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	शहरी	80	13.31	1.688				
वस्तुनिष्ठ दक्षता	ग्रामीण	170	21.73	1.861	.274	4.259	< .01	सार्थक अन्तर
	पहरी	80	20.56	2.092				
शैक्षणिक गतिविधियों से सम्बन्धित दक्षता	ग्रामीण	170	3.96	.999	.158	2.267	< .05	सार्थक अन्तर
	शहरी	80	3.60	1.239				
मूल्यांकन दक्षता	ग्रामीण	170	12.41	1.838	.269	1.112	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	शहरी	80	12.11	2.050				
प्रबन्धकीय दक्षता	ग्रामीण	170	17.26	1.793	.287	1.617	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	शहरी	80	16.80	2.258				
अभिभावकों के साथ काम करने सम्बन्धी दक्षता	ग्रामीण	170	8.48	1.468	.218	.778	> .05	सार्थक अन्तर नहीं
	शहरी	80	8.31	1.673				
अध्ययन–अध्यापन सामग्री विकसित करने की दक्षता	ग्रामीण	170	13.88	1.225	.248	1.893	> .05	सार्थक अन्तर नहीं

सारणी संख्या 4.2 में क्रम संख्या–1 पर अंकित प्रास ंगिक दक्षता पर ग्रामीण शहरी परिवेश के शिक्षको ं के प्राप्तांको ं के मध्यमान क्रमशः 4.56 तथा 4. 48 पाया गया इनके मानक विचलन क्रमशः .532 तथा .527 पाये गये हैं। मानक त्रुटि .072 तथा क्रान्तिक अनुपात 1.252 पाया गया है जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया है। भावात्मक क्षेत्र की प्रासगिक दक्षता पर ग्रमीण और शहरी परिवेश के अध्यापको ं के प्राप्ताको ं के मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र का अधिक पाया गया। परन्तु सांख्यिकीय गणना मे ं मध्यमानो ं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसलिए कहा जा सकता है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रं के अध्यापक प्रास ंगिक दक्षता पर एक समान रूप से उपलब्धि हासिल कर सकते हैं।

सारणी 4.5 षिक्षण अनुभव के आधार पर प्रासगिक दक्षताओ ं षिक्षण अनुभव के आधार पर प्रासंगिक दक्षताओ ं अनुभव के आधार पर प्रासंगिक दक्षताओ ं का प्रसरण का प्रसरण विश्लेषण

	प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	df	मध्यमान वर्ग	f	सार्थकता स्तर
प्रासंगिक दक्षता	समूहो मे	.411	2	.205	.727	सार्थक अन्तर नहीं
	मिस्रित समूह	69.765	247	.282		
	योग	70.176	249			

प्रास ंगिक दक्षता का प्रसरण विश्लेषण संख्या 4.5 में देखने पर पाया गया कि F – अनुपात का मान .727 पाया गया है। जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः

भावात्मक क्षेत्र की प्रासंगिक दक्षता के प्राप्तांको ं के मध्यमानो ं पर शिक्षण अनुभव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। सभी तीनो ं अनुभव वर्गों के शिक्षक एक पायदान पर खड़ ं पाय ं गये हैं । निष्कर्ष

षिक्षा का प्रमुख कार्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना हाते ा है। सर्वांगीण विकास का अर्थ व्यक्ति के भौतिक, बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एव ं अध्यात्मिक विकास से होता है। षिक्षक को षिक्षा प्रणाली की रीढ़ की हड्डी माना जाता है। षिक्षक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास मे ं महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मानव में कौषलो ं के विकास एवं ज्ञान अर्जन में षिक्षको ं का महत्वपूर्ण योगदान हाते ा है। अतः षिक्षक के द्वारा ही षिक्षा प्रणाली में प्रभावी ढग से सुधार एव ं उन्नयन किया जा

सकता है। षिक्षा प्रणाली में प्रभावी एग से सुधार एव ं उन्नयन के लिए षिक्षक का केवल अपने विषय का ज्ञाता होना ही आवश्यक नहीं है बल्कि उस ` एक कुषल मानसिकता वाला हाने ा भी आवष्यक है। षिक्षक की योग्यता में कार्य कुषलता के साथ–साथ उसकी प्रतिबद्धता को सम्मिलित किया जाना अति आवश्यक है क्योकि षिक्षक जितना अधिक प्रतिबद्ध हागे ा, उतनी ही अधिक योग्यता का उसमें उन्नयन हागे ा तथा उसकी कार्यकुषलता मे ं वृद्धि होगी। इस प्रकार प्रतिबद्धता, कार्यकुषलता और योग्यता ये तीनो ं परस्पर सम्बन्धित होकर किसी भी कार्य को सुचारू रूप से करने की प्रेरणा देत ` है। षिक्षा के गुणात्मक उन्नयन में षिक्षको ं की प्रतिबद्धता की महत्वपूर्ण भूमिका हाते ी है तथा एक प्रतिबद्ध षिक्षक ही छात्रो ं के लिए आदर्ष एव ं प्रेरणादायी स्राते सिद्ध हो सकता है।

शिक्षा ही वह ज्योतिपुंज है जो मानव मस्तिष्क के अंधकार को दूर करक ` ज्ञान रूपी प्रकाश को आलोकित करती है। शिक्षा मानव को मुक्ति का माग र प्रशस्त करती है शिक्षा के द्वारा कीर्ति का प्रकाश चारो ं ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओ ं को सुझाती है और हमारे जीवन को सुसस्ं कृत करती है। कल्पलता की भांति शिक्षा हमारे लिए क्या–क्या नहीं करती है। अर्थात् जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्यास्त हाने ` पर कुमल्हा जाता है ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर व्यक्ति कमल के फूल की भांति खिल उठता है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलन ` वाली सतत् प्रक्रिया है, जो बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियो ं का विकास कर उस ` पणू ाता प्रदान करती है। जिस प्रकार शिक्षा एक आरे बालक का सर्वांगीण विकास करके उस ` बुद्धिमान चरित्रवान बनाती है उसी प्रकार दूसरी आर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी आवश्यक साधन हैं। राष्ट्र की प्रगति का आधार शिक्षा को ही माना जाता है। सन्दर्भ ग्रन्थ सचू ी

1. बालिया, धीरज (2013); इन स्टडी ऑफ आपे ीनियन ऑफ सैकण्डरी स्कूल टीचर्स टूवार्ड्स टीचिंग प्रोफशे ान इन रिलेशन टू देयर लोकेलिटी एकेडमिक क्लासीफिकशे ान एण्ड टीचिंग एक्सपीरियन्स, शोध समीक्षा और मूल्यांकन, अप्रैल 2013, पृ0 30।

2. भदौरिया, सुनीता (2013); उच्च माध्यमिक विद्यालयो ं मे ं कार्यरत शिक्षको ं एव ं शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, शोध समीक्षा और मूल्यांकन, जनवरी 2013, पृ0 93।

3. चन्द्र, सतीश, महेश कुमार मुछाल (2011); स्ववित्तपोषित एव ं अनुदानित माध्यमिक विद्यालयो ं में कार्यरत शिक्षको ं की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन, दिगम्बर जैन (पीजी) कॉलेज, बड ौत (बागपत) भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 30, अंक–1, जनवरी– जून 2011, पृ0 9।

4. गगं वार, पुष्पेन्द्र एव ं ए.के. गौड (2010); वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियो ं की शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षण अभिवृत्ति एव ं दायित्व बोध के परिप्रेक्ष्य मे ं अध्ययन। एम.फिल डिजर्टशे ान एब्सट्रेक्ट, डी.ई.आई. आगरा, जनवरी 2011, चतुर्थ अंक, पृ0 97।

5. गदम, अजय एम. (2013); टीचर अवेयरनेस द रिस्पोसिबिलिटी अण्डरराइटटू फ्री एण्ड कम्पलसरी एजूकेशन एक्ट, शोध समीक्षा और मूल्यांकन, फरवरी–2013, पृ0 38।

6. गुप्ता, संगीता एवं मोहन्ती, ए.के. (2009); भावी शिक्षको ं की शिक्षण व्यवसाय, कक्षा–कक्ष शिक्षण तथा छात्र केन्द्रित अभ्यास के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, जनरल ऑफ टीचर एजूकेशन एण्ड रिसर्च, नई दिल्ली, वर्ष 4, अंक 2, पृ0 67–76।

7. जोशेफ, शोली (2009); कन्नूर वि0वि0 (भारत) बी.एड. मे ं अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियो ं की शिक्षण के प्रति रूचि का अध्ययन, एक्सपैरीमेन्ट इन एजूकेशन, वर्ष 29, अंक 12, पृ0 64।

8. कुमार, अरविन्द (2010). अशासकीय एव ं विद्याभारती द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयो ं में कार्यरत शिक्षको ं की व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष–29, अंक–2, जुलाई–दिसम्बर 2010, पृ0 39।

9. सिहं गौतम एवं सविता श्रीवास्तव (2010); माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो ं के पारिवारिक वातावरण का आदर्श मूल्यों पर प्र ाव, एम.एड. डिजर्टेशन एब्स ट्रेक्ट्स, डी.ई.आई. FORA] आगरा, जनवरी 2011।

10. सिहं , रेनू एवं विभा निगम (2010); सामाजिक–आर्थिक स्तर के परिप्रेक्ष्य में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो ं की शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक रूचियो ं का अध्ययन, एम. फिलडिजरटेशन एब्सट्रेक्ट्स, डी.ई.आईथ्व्।, आगरा, जनवरी 2011, पृ0 101।